been taken to raise the height of the perimeter wall in certain areas and to augment lighting around Stores premises. Security surveillance including partrolling also have been strengthened in the area.

उपग्रहों का प्रक्षेपण

446. **श्री ओंकार सिंह लखावत:** क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) इस समय भारत के कितने और कौन-कौन से उपग्रह अंतरिक्ष में हैं; इनमें से कितने उपग्रह सुचारू रूप से कार्य कर रहे हैं तथा कौन सा उपग्रह क्या कार्य कर रहा है;

(ख) भविष्य में कौन-कौन से उपग्रह छोड़े जाने की योजना है;

(ग) क्या सरकार की इस संबंध में कोई दीर्घकालीन योजना है; और

(घ) क्या अंतरिक्ष केन्द्र "फ्रीडम" से जोड़ने और उसे सहयोग देने की कोई योजना है?

विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्रीमती वसुन्धरा राजे): (क) इस समय कक्षा में 17 भारतीय उपग्रह हैं। ये निम्नलिखित हैं:

1. एरियाने पैसेंजर नीतभार परीक्षण (एप्पल)
2. विस्तृत रोहिणी उपग्रह श्रृंखला (श्रोत-सी2)
3. भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह-1ए (इन्सैट-1ए)
4. भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह-1बी (इन्सैट-1बी)
5. भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह-1सी (इन्सैट-1सी)
6. भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह-1डी (इन्सैट-1डी)
7. भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह-2ए (इन्सैट-2ए)
8. भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह-2बी (इन्सैट-2बी)
9. भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह-2सी (इन्सैट-2सी)
10. भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह-2डी (इन्सैट-2डी)
11. भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह-2डीटी (इन्सैट-2डीटी)
12. भारतीय सूदूर संवेदन उपग्रह-1ए
13. (आई॰आर॰एस॰-1ए)
14. भारतीय सूदूर संवेदन उपग्रह-1बी
15. (आई॰आर॰एस॰-1बी)
16. भारतीय सूदूर संवेदन उपग्रह-पी2
17. (आई॰आर॰एस॰-पी2)
    भारतीय सूदूर संवेदन उपग्रह-1सी
    (आई॰आर॰एस॰-1सी)
    भारतीय सूदूर संवेदन उपग्रह-पी3
    (आई॰आर॰एस॰-पी3)
    भारतीय सूदूर संवेदन उपग्रह-1डी
    (आई॰आर॰एस॰-1डी)

इन उपग्रहों में से निम्नलिखित कार्य कर रहे हैं तथा इन उपग्रहों के कार्य प्रत्येक के सामने दिए गए हैं:

1. इन्सैट-1डी — दूरसंचार, दूरदर्शन प्रसारण, रेडियो नेटवर्किंग, मौसमविज्ञान तथा आपदा चेतावनी सेवाएं।
2. इन्सैट-2ए — दूरसंचार, दूरदर्शन प्रसारण, रेडियो नेटवर्किंग, मौसमविज्ञान, खोज और बचाव चेतावनी, आपदा चेतावनी सेवाएं।
3. इन्सैट-2बी — दूरसंचार, दूरदर्शन प्रसारण, रेडियो नेटवर्किंग, मौसमविज्ञान, खोज और बचाव चेतावनी एवं आपदा चेतावनी सेवाएं।
4. इन्सैट-2सी — दूरसंचार, दूरदर्शन प्रसारण, रेडियो नेटवर्किंग, आपदा चेतावनी सेवाएं, प्रायोगिक मोबाइल संचार एवं के॰यू॰ बैंड संचार।
5. इन्सैट-2डीटी — दूरसंचार, दूरदर्शन प्रसारण।
6. आई॰आर॰एस॰-1बी — प्राकृतिक संसाधनों का सर्वेक्षण और प्रबंध।
7. आई॰आर॰एस॰-1सी — प्राकृतिक संसाधनों का सर्वेक्षण और प्रबंध, पर्यावरण का मानीटरन, मानचित्रण के लिए उच्च विभेदन प्रतिबिम्बिकी, वनस्पति के मानीटरन के लिए संक्षिप्त सर्वेक्षण।

8. आई॰आर॰एस॰-1डी — प्राकृतिक संसाधनों का सर्वेक्षण और प्रबंध, पर्यावरण का मानीटरन, मानचित्रण के लिए उच्च विभेदन प्रतिबिम्बिकी, वनस्पति के मानीटरन के लिए संक्षिप्त सर्वेक्षण।

9. आई॰आर॰एस॰-पी3 — समुद्रविज्ञानीय उपयोग, उच्च आवृत्ति वाले पर्यवेक्षणों एवं एक्स-किरण खगोलिकी सहित भूमि एवं कृषि-आधारित उपयोगों के लिए संक्षिप्त सर्वेक्षण।

10. श्रोस-सी2 — ऊपरी वायुमण्डलीय मापन/अध्ययन, गामा-किरण खगोलिकी।

(ख) और (ग) आगामी योजनाओं के भाग के रूप में निम्नलिखित उपग्रहों को प्रमोचित किए जाने की योजना है:

1. इन्सैट-2ई
2. इन्सैट-3ए
3. इन्सैट-3बी
4. इन्सैट-3सी
5. इन्सैट-3डी
6. इन्सैट-3ई
7. जीसैट-1
8. जीसैट-2
9. आई॰आर॰एस॰-पी4
10. आई॰आर॰एस॰-पी5
11. आई॰आर॰एस॰-पी6

(घ) जी, नहीं।

भूमिगत जल स्तर में गिरावट

447. **श्री गोपाल सिंह जी सोलंकी:** क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार ने गुजरात राज्य के कुछ जिलों में भूमिगत जल स्तर में गिरावट के संबंध में कोई सघन सर्वेक्षण किया है;

(ख) यदि हां, तो इसका जिलावार ब्यौरा क्या है;

(ग) क्या राज्य के कुछ क्षेत्रों में पेयजल की समस्या और सिंचाई के संसाधनों की कमी से निपटने के लिए सरकार ने कोई कार्य योजना बनाई है; और

(घ) क्या राज्य के सूखाग्रस्त जिले कच्छ में पेयजल की अत्यधिक कमी को दूर करने के लिए आधुनिक तकनीक अपनाने पर सरकार ने कोई निर्णय लिया है?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा जल संसाधन मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री सोमपाल): (क) जी, हां।

(ख) केन्द्रीय भूमि जल बोर्ड द्वारा गुजरात में भूजल स्तरों के दीर्घकालीन प्रेक्षण किए गए हैं। इस राज्य में उथले जलभृतों में 10.41 मीटर तक और गहरे जलभृतों में 50.37 मीटर तक जल स्तरों में गिरावट दिखाई गई है। गुजरात में भूजल स्तर की जिलावार गिरावट का ब्यौरा संलग्न विवरण में दिखाया गया है। (नीचे देखिए)

(ग) और (घ) गुजरात सरकार द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना के अनुसार पंचमहल जिलों सहित सौराष्ट्र, कच्छ, उत्तरी गुजरात के लिए स्थायी पेय जल स्रोतों के लिए 4,700 करोड़ रु॰ की अनुमानित लागत से सरदार सरोवर नहर और माही पाइप लाइन पर आधारित पेय जल आपूर्ति योजना तैयार की गई है। कच्छ जिला की पेय जल समस्या को हल करने के लिए पुनर्भरण और जल जमा करने वाली संरचनाओं का व्यापक कार्य भी शुरू किया गया है। राज्य सरकार ने यह भी सूचित किया है कि उन्होंने इस क्षेत्र में पेय जल तथा सिंचाई संसाधनों की कमी की समस्या को हल करने के लिए 359.5 करोड़ रु॰ की राशि को ओ ई सी एफ(जापान) सहायता के वास्ते उत्तरी गुजरात क्षेत्र में अति-दोहन जलभृतों में सतही जल पुनर्भरण बढ़ाने के लिए एक परियोजना तैयार की है।

देश के विभिन्न भागों में कुओं की खुदाई करके वैज्ञानिक अन्वेषण करते हुए केन्द्रीय भूमि जल बोर्ड ने कच्छ जिले में 12 कुएं सौंपे हैं।